

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA

शगोल कांजै
SAGOL KANGJEI



विवरणिका BROCHURE

भारतीय डाक



तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

जारी करने की तारीख : 29 नवम्बर, 2014
Date of Issue : 29 November, 2014

मूल्यवर्ग : 500 पैसा
Denomination : 500 p

मुद्रित डाक-टिकटें : 6 लाख*
Stamps Printed : 0.6 Million*

मुद्रण प्रक्रिया : वेट ऑफसेट
Printing Process : Wet Offset

मुद्रक : प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer : Security Printing Press,
Hyderabad

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास हैं।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

*1 लाख प्रस्तावक हेतु
*0.1 Million for the proponent

मूल्य ₹ 5.00

SAGOL KANGJEI

"Sagol Kangjei" is derived from the two Manipuri words 'Sagol' for horse and 'Kangjei' for hooking stick. Lt. Joseph Ford Sherer, who was instrumental in introducing the sport to Europeans, in 1859, as a young lieutenant and adjutant of the 44th (Sylhet) Regiment of (Bengal) Native (Light Infantry), along with Captain Robert Stewart, Superintendent of Cachar, founded a European Polo Club. Five years later, in the year 1864, Sherer and his team of seven Manipuri men, nicknamed 'The Brothers', took the game to Calcutta where it immediately became very popular. George Frederick Samuel Robinson, 1st Marquess of Ripon, former Viceroy of India, while speaking in the British Parliament (House of Lords) on 22nd June 1891, described Manipur as the birth place of Polo.

The story behind the origin of the game in Manipur is very interesting. King Kangha, who reigned Manipur in 3300 B.C., is believed to have introduced Sagol Kangjei. During a festival known as Ukrong Hongba, he demonstrated how a bamboo root clump could be dribbled with his walking stick, and asked his subjects to play the game on horseback. The game first found mention in the Royal Chronicle of Manipur, *Cheitharol Kumbaba*, in 33AD.

The game is played with seven members in each team, representing seven Manipuri

ancestral clans. The players are mounted on Manipuri ponies which are four to five feet high but hardy and active. The ponies are fully decorated, with various guards protecting their eyes, forehead and flanks. The main implements used in the game are *Kangjei*, the polo stick, a long shaft of bamboo with a head of hard wood set on at an obtuse angle and the ball, *Kangdrum* which is made of bamboo root. The saddle used in the game is large, light and peaked both in front and the back. In addition to it, there is a pair of leather flaps which project around the legs of the rider and afford some protection from a blow.

The rules of the game are not obvious. In fact, most observers of the sport declare that rules are conspicuous by their absence. A goal is scored in this game once the ball crosses the back line and the ball is again thrown in from the middle line, not along the ground, but in the air, so as to give occasion for a brilliant stroke of hitting it in mid-air or catching the ball by hand.

Department of Posts is happy to release a Postage Stamp to commemorate the occasion of the 150th anniversary of introduction of Sagol Kangjei to the world.

Credits:-

Text : Based on the material furnished by the proponent.
Stamp/FDC : Kamleshwar Singh
Cancellation : Nenu Gupta
Cachet

शगोल कांजै

“शगोल कांजै” शब्द मणिपुरी भाषा के दो शब्दों से उद्भूत है—‘शगोल’ का अर्थ है—अश्व और ‘कांजै’ का अर्थ है—हुकिंग स्टिक। लेफ्टिनेंट जोसफ फोर्ड शेरर ने यूरोप में इस खेल की शुरुआत करने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। युवा लेफ्टिनेंट और 44वीं (सिलहट) (बंगाल) रेजिमेंट (लाइट इंफेंट्री) के एडज्यूटेंट के रूप में उन्होंने कछार के अधीक्षक, कॅप्टन राबर्ट स्टीवर्ट के साथ 1859 में यूरोपियन पोलो क्लब की स्थापना की। 5 वर्ष बाद, वर्ष 1864 में शेरर और ‘द ब्रदर्स’ नामक सात मणिपुरी खिलाड़ियों की टीम ने कलकत्ता में इस खेल की शुरुआत की, जहां यह खेल तत्काल अत्यंत लोकप्रिय हो गया। भारत के पूर्व वाइसराय और प्रथम मार्किंस ऑफ रिपन, जॉर्ज फ्रेड्रिक सेमुअल रोबिनसन ने 22 जून 1891 को ब्रिटिश संसद (हाउस आफ लार्ड्स) में अपने संबोधन के दौरान मणिपुर को पोलो का जन्मस्थान बताया।

मणिपुर में इस खेल के प्रारंभ की कहानी अत्यंत रोचक है। ऐसा माना जाता है कि 3300 ईसापूर्व में मणिपुर के शासक, राजा कांधा ने शगोल कांजै की शुरुआत की थी। उक्रोंग होंगना नामक उत्सव के दौरान उन्होंने दिखाया कि किस प्रकार बांस की जड़ के पिण्ड को छड़ी (वॉकिंग स्टिक) की सहायता से झिनल किया जा सकता है। उन्होंने अपनी प्रजा को घोड़े पर सवार होकर यह खेल खेलने की प्रेरणा दी। इस खेल का प्रथम उल्लेख 33वीं ईसवी में मणिपुर के शाही प्रलेख (क्रॉनिकल), चेईथारोल कुंबाबा में मिलता है।

इस खेल में प्रत्येक टीम में 7 सदस्य होते हैं, जो मणिपुर के सात प्राचीन वंशजों का प्रतिनिधित्व करते हैं। खिलाड़ी, मणिपुरी घोड़ों पर सवार होते हैं। ये मणिपुरी घोड़े 4 से 5 फुट ऊंचे परंतु मजबूत एवं फुर्तीले होते हैं। इन घोड़ों की आंखों,

मस्तक और शरीर को चोट से बचाने के लिए सुंदर कवचों से सजाया जाता है। इस खेल में प्रयोग होने वाले मुख्य उपकरण हैं—कांजै अर्थात् पोलो स्टिक, जोकि बांस की लंबी छड़ होती है। इसका अगला सिरा अधिक कोण (अब्द्यूस एंगल) पर मजबूत लकड़ी का बना होता है, तथा इस खेल में प्रयोग होने वाली गेंद, जिसे कांगड्रम कहते हैं। यह बांस की जड़ से बनी होती है। इस खेल में प्रयोग होने वाली जीन (सैडल) विशाल, हल्की और आगे-पीछे के कोनों से उठी हुई होती है। इसके अतिरिक्त, घुड़सवार खिलाड़ियों की टांगों को चोट से सुरक्षा प्रदान करने हेतु चमड़े से बना विशेष पलैप (कवर) भी इस्तेमाल किया जाता है।

इस खेल के नियम स्पष्ट नहीं हैं। वस्तुतः, इस खेल के अधिकतर प्रेमियों को इसके नियमों का अभाव आश्चर्य में डाल देता है। इस खेल में गोल तब हुआ माना जाता है, जब गेंद पिछली रेखा को पार कर जाती है और पुनः इस गेंद को खेल के मैदान की मध्य रेखा से जमीन पर लुढ़काने के बजाए, हवा में उछाला जाता है ताकि खिलाड़ियों को इस गेंद पर हवा में ही शानदार स्ट्रोक लगाने अथवा इसे कैच करने का अवसर मिल सके।

डाक विभाग, विश्व में शगोल कांजै की शुरुआत के 150 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में, स्मारक डाक-टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार :-

| | |
|----------------------------|---|
| मूलपाठ | : प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री पर आधारित |
| डाक-टिकट / प्रथम दिवस आवरण | : कमलेश्वर सिंह |
| विरूपण | : नीनू गुप्ता |